तुलसीदास जी के साहित्य में निहित सामाजिक जीवन मूल्य

शोध पर्यवेक्षक
प्रो.(डॉ.) सपना जोशी
कोटा विश्वविद्यालय, कोटा

शोधार्थी
मीना तिवारी
कोटा विश्वविद्यालय, कोटा

1. प्रस्तावना

शिक्षा का मूल उद्देश्य केवल ज्ञान अर्जन नहीं बल्कि व्यक्तित्व निर्माण और जीवन मूल्यों का विकास भी है। साहित्य जो मानवीय संवेदनाओं, नैतिकता और समाज के यथार्थ का प्रतिबिंब करता है, शिक्षा के माध्यम से जीवन मूल्यों को आत्म–सात करने का एक प्रभावी साधन है। शिक्षा के द्वारा ही एक मानव सामाजिक एवं सांस्कृतिक ज्ञान अर्जित कर जगत के विभिन्न प्राणियों से पृथक अपनी सत्ता को कायम करता है।

जीवन मूल्य वह नैतिक, सामाजिक, मानसिक और आध्यात्मिक आदर्श होते हैं, जो व्यक्ति को श्रेष्ठता की ओर अग्रसर करते हैं और समाज में उच्च मानवीय चेतना का विकास करते हैं। भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी धरोहर उसका वैदिक साहित्य है। साहित्य में समाज का यथार्थ प्रतिबिंबित उभरता है। साहित्य के द्वारा ही मानव जीवन की विविध भावनाओं, विचार–धाराओं और जीवन मूल्यों को अभिव्यक्ति मिलती है। साहित्य शिक्षा का एक प्रमुख स्रोत है, जो छात्रों को केवल सूचनाऐं नहीं देता है, बल्कि उन्हें गहराई से सोचने समझने और अपने विचारों को व्यक्त करने की क्षमता भी प्रदान करता है। साहित्य समाज का दर्पण होता है। तुलसीदास जी हिन्दी साहित्य की रामभक्ति परम्परा के सशक्त आधार स्तंभ हैं। रामभक्ति को जन–जीवन में प्रसारित करने में तुलसीदास जी का महत्वपूर्ण योगदान हैं।

2. समस्या का औचित्य

आधुनिक काल में शिक्षा, शिक्षार्थी, अभिभावक एवं पाठ्यक्रम सभी का स्वरूप बदल गया है। मूल्य आधारित शोध आज की आवश्यकता है। तुलसीदास जी के साहित्य में निहित जीवन मूल्यों को आत्मसात करके मनुष्य असीम सफलता को प्राप्त कर सकता है। वर्तमान समय में हम तकनीकी दृष्टि से तो प्रगतिशील हो गये है, परंतु मूल्य परक शिक्षा का अभाव सर्वत्र परिलक्षित होता है। तुलसीदास जी के साहित्य में वर्णित मूल्यों को जीवन में उतारना वर्तमान समय की महती आवश्यकता है।

3. शोध उद्देश्य

तुलसीदास जी के साहित्य में निहित सामाजिक जीवन मूल्यों का अध्ययन करना।

4. शोध–परिसीमन

तुलसीदास जी द्वारा रचित 11 कृतियों को इस शोध में सम्मिलित किया गया है। इन कृतियों के माध्यम से तुलसी साहित्य में निहित सामाजिक मूल्यों पर प्रकाश डाला गया है।

5. शोध विधि

शोध की प्रकृति के आधार पर शोधार्थी द्वारा शोध के लिए विश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग किया गया है।

6. व्याख्या एवं विवेचन

महाकवि तुलसीदास जी मध्ययुग के ऐसे कवि सिद्ध हुए है, जिनके साहित्य ने मानव जाति के लिए आचरण संहिता का कार्य किया है। सामाजिक जीवन की समस्त परिस्थितियों के कुशल मनोवैज्ञानिक तुलसीदस जी ने प्रत्येक पात्र की मनः स्थिति को पहचान कर अपने शब्दों में उन मनोभावों को अभिव्यक्त किया है। तुलसी रचित समग्र साहित्य सरोवर ऐसे भाव कमल पल्लवित एवं पुष्पित करता है, जो ह्रदयात्मक होते है।

सामाजिक जीवन मूल्य युग और परिस्थिति के अनुसार परिवर्तित होते रहते है। इसलिए ये न तो शाश्वत होते है और न ही निरपेक्ष। तुलसीदास जी का अविर्भाव जिस समय हुआ था, वह समय हिन्दू जाति के लिए घोर निराशा का था। उन्होंने उस समय भगवान का लोक मंगल रूप दिखाकर हिन्दू जाति को नयी दिशा प्रदान की। रामचरित मानस भक्ति युग की यह उज्ज्वल मणि है, जिसकी अलौकिक माया से आज भी प्रत्येक परिवार और समाज के जीवन मूल्य प्रकाशित हो रहे है। तुलसीदास जी ने राम की लोकपावन कथा द्वारा मानव जीवन की गुत्थियों को बडी मुश्किल से सुलझाया एवं सामाजिक आदर्शों का सर्वांगीण प्रतिपादन किया। रामचरित मानस में कविवर ने जिन सामाजिक परिवेश का चित्रण किया है, उनमें सर्वप्रथम देवताओं का वर्णन आता है।

राम का अवतार धर्म की स्थापना के लिए हुआ है। तुलसीदास जी राम के अनन्य भक्त थे। जहां उन्हें अवसर मिला उन्होंने राम का यश गाान करने में कमी नहीं की है। तुलसीदास ने अपना तन एवं मन राम को समर्पित कर रखा था, राम ही उनके लिए सब कुछ थे। तुलसी के काव्य में भारतीय समाज का मर्यादित स्वरूप प्रस्तुत किया गया है। सभ्यता एवं संस्कृति के विकास के

साथ समाज ने कुछ ऐसी मान्यताऐं स्थापित की है, जिनके अनुकूल आचरण, धर्म नीति, सदाचार एवं शिष्टता की सीमा में समाहित होकर उचित माने जाते है तथा उनके प्रतिकूल आचरण को अधर्म, अनीति, कदाचार एवं अशिष्टता की संज्ञा प्रदान कर अनुचित माना जाता है।

एक ओर राम राज्य का वर्णन है तो दूसरी ओर रावण राज्य का आंतक देखने में आता है। तुलसीदास जी ने रावण को बुराइयों का प्रतीक माना है तथा राम को अच्छाइयों का प्रतीक। राम चरित मानस में कवि ने राम के सामाजिक पक्ष को उजागर करते हुए उनके कर्तव्य की सराहना की है ''राम चरित मानस'' का गहन कार्य राम राज्य की स्थापना है। राम इसी कार्य के सम्पादनार्थ उत्तर से दक्षिण को प्रयाण करते है।

गोस्वामी जी ने राम जन्म से लेकर राज्य अभिषेक तक के राम–जीवन को अपनी कथा का आधार बनाकर जीवन के विभिन्न पक्षों का सुन्दर चित्रण किया है। जीवन के विविध रूपों को प्रस्तुत करने के लिए कवि ने विवाह, राज्याभिषेक, सामूहिक उत्सव एवं रीति–रिवाज देवी–देवताओं के पूजन आदि का विस्तृत वर्णन किया है। तुलसी के राम आज भी अपने सगुण रूप में हिन्दू मंदिरों के दिव्य सिंहासन पर आरूढ़ हैं। अपनी आलौकिक आभा से जन–जन के हृदय मंदिर में निर्गुण निराकर रूप में स्मरणीय एवं वंदनीय है।

''कवितावली'' वस्तुतः एक संग्रह ग्रंथ है जिसमें रामकथा के खण्ड चित्रों की चित्रशाला है। जिसके साथ कवि ने तत्कालीन समाज और जीवन के चित्र भी प्रस्तुत किए है। कवितावली में कवि ने अपने समाज की चार प्रमुख राष्ट्रीय समस्याओं गरीबी, शोषण एवं महामारी का विस्तृत चित्रण किया है। कवितावली के अतिरिक्त ''गीतावली'' एवं ''विनय पत्रिका'' में कथा प्रेम के साथ–साथ आत्म निवेदन भी दिखाई पड़ता है। गीतावली रामचरित मानस के कथा क्रम पर निर्वहित है, जबकि विनय पत्रिका राम दरबार में तुलसी की दीन दशा व जीवन की खुला प्रकाशन है जो जानकी की कृपा में पूर्ण हुआ।

''पार्वती मंगल'' में भगवान शिव और पार्वती के विवाह का क्रमबद्ध वर्णन है। कवि ने इसमें विवाह संबंधी रीति रिवाजों, परम्पराओं तथा व्यवहारों का सूक्ष्म एवं मनोहारी वर्णन किया है। महाकवि ने अपने काव्य ग्रंथ में पूजन के महत्व का विस्तार से वर्णन किया है। पार्वती मंगल में तुलसी दास जी ने देवाधिदेव भगवान शंकर द्वारा जगदम्बा पार्वती के कल्याणमय पाणिग्रहण का काव्यमय चित्रण किया है। जगदम्बा पार्वती ने भगवान शंकर जैसे निरन्तर समाधी में लीन रहने वाले व्यक्तित्व के लिए कठोर साधना की। यह इतिहास एक प्रकार स्तम्भ की भांति भारतीय बालिकाओं को पतिव्रत के कठिन मार्ग पर अडिग रूप से चलने के लिए प्रेरणा देता रहेगा।

''जानकी मंगल'' में मर्यादा पुरूषोत्तम राम के साथ जानकी के मंगलमय विवाहोत्सव का वर्णन है। धनुष यज्ञ प्रसंग में तुलसीदास जी ने अपना मस्तिष्क एवं हृदय डाल दिया है। तुलसीदास

जी के साहित्य ने हमारे जीवन में ऐसे सामाजिक मूल्यों को स्थापित किया है, जिनका अनुकरण करके हमें सर्वत्र, प्रतिष्ठा, सफलता एवं आनन्द की प्राप्ति होती है। तुलसी साहित्य में सामाजिक आदर्शों एवं सामाजिक जीवन की मान्यताओं का निर्माण एवं उनका निर्वाह करके एक सभ्य, सुसंस्कृत एवं प्रगतिशील समाज की स्थापना की है।

संपूर्ण राम काव्य समाज के प्रखर एवं प्रबद्ध स्वरों से परिपूर्ण है। राम जन–जीवन के संघषों तथा आदर्शों के पुनीत प्रतीक रूप में हमारे समक्ष प्रतिष्ठित होते है। रामकथा सामाजिक धरातल के यर्थाथ से जुड़ी हुई है।

7. शोध निष्कर्ष

- तुलसीदास जी का संपूर्ण साहित्य सामाजिक, सांस्कृतिक एवं पारिवारिक जीवन मूल्यों को प्रतिबिंबित है। उनके साहित्य के अनुसार जीवन मूल्यों का विश्लेषण करने पर निम्नलिखित शोध निष्कर्ष सामने आते है –
- तुलसीदास जी के साहित्य में व्यक्ति धर्म, परिवार धर्म और समाज धर्म का विवेचन हुआ है। व्यक्ति से ऊंचा परिवार और परिवार से ऊंचा समाज और समाज से ऊंचा लोक धर्म मानते हुए तुलसी ने भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की व्याख्या की।
- तुलसीदास जातीय जन जागरण के सर्वश्रेष्ठ कवि है। उनकी कविता का आधार जनता की एकता है। इस जातीय एकता के मार्ग में साम्प्रादायिता, उंच –नीच का भेदभाव, आदि अनेक बाधाऐं है। तुलसी ने अपने साहित्य में जिन जीवन मूल्यों की स्थापना की है वे हमें संघर्ष करना सिखाती है।
- तुलसी का मूल संदेश मानव प्रेम है। इसलिए उन्होंने अपने युग की परिस्थितियों से दुखी होकर मर्यादा पुरूषोतम राम के परिवार को आदर्श मानकर जनता के समक्ष प्रस्तुत किया है।
- तुलसी के राम एक आदर्श मित्र के रूप में भी दिखाई भी दिखाई पड़ते है। सुग्रीव से मित्रता होने पर बालि से उनकी रक्षा का आश्वासन देते हुए कहते है जो व्यक्ति अपने मित्र के दुख में दुखी नहीं होता, उसे देखना भी पाप है।
- राम चित्रकूट में सबसे पहले कैकयी से मिले, क्योंकि वे जानते थे कि कैकयी को बहुत पश्चाताप हो रहा है। राम ने उन्हें यह कहकर दोष मुक्त किया कि ये जो भी हुआ है इसमें आपका कोई दोष नहीं है।

- तुलसी की काव्य रचना का मूल उद्देश्य लोक मंगल की भावना है। लोक मंगल का विधान तभी हो सकता है जब समाज एवं परिवार में नैतिक मूल्यों की स्थापना हो। तुलसी की दृष्टि राम कथा के माध्यम से आदर्श जीवन मूल्यों की स्थापना पर ही केन्द्रित थी।
- समाज के आदर्शवादी मूल्यों के साथ–साथ तुलसीदास जी पारिवारिक आदर्श के रूप में विभिन्न पात्रों को प्रस्तुत किया हैं। तुलसी के राम भारतीय जनता के नैतिक गुणों का प्रतिनिधित्व करते है।
- राम की मानवीय सहानुभूति माता, पिता, भाई सभी के लिए है। सीता पतिव्रत धर्म का आदर्श प्रस्तुत करती है। राम एक आदर्श पुत्र की भूमिका निभाते हए समाज के सामने आदर्श प्रस्तुत करते है।
- राम चरित मानस में तुलसीदास जी ने अयोध्या के प्रत्येक नागरिक द्वारा सामाजिक प्रतिमानों का निष्ठापूर्वक पालन दर्शाया है इसी कारण यहां का समाज द्रुतगति से विकास की नवीन सीढियों को पार करता हुआ चहुमुखी उन्नति को प्राप्त करता है।
- क्षत्रियों ने परहित को सबसे बड़ा धर्म मानकर अपने वंश का नाम स्वर्णाक्षरों में इतिहास के पत्रों में दर्ज करवाया जो हमेशा से ही मानव जाति के लिए प्रेरणा स्रोत रहा है।
- हनुमान ने अपना संपूर्ण जीवन ही परहित में समर्पित कर दिया था। धन्य है हनुमान जो वानरकुल में जन्म लेकर श्रीराम के ही समान परहित के कारण हमारे वंदनीय एवं अनुकरणीय है।
- जिस देश में नागरिकों में बंधुत्व की भावना कूट–कूट कर भरी है उस देश को भला उन्नति पथ से कौन भ्रमित कर सकता है? इसी भावना को तुलसीदास जी ने '' वसुधैव कुटुम्बकम् '' के रूप में स्वीकार करके भारत वर्ष को जगदगुरू की ख्याति दिलवायी।
- वाणी मनुष्य का सर्वश्रेष्ठ आभूषण है। अतः मनुष्य को चाहिए कि वह राम दिवत् वाणी का प्रयोग करके श्रेष्ठता का परिचय दे। मधुरवाणी में वो शक्ति है, जिससे दुश्मन भी मित्र बन जाते है। तुलसी साहित्य का विवेचन करने पर यह तथ्य प्रमुख रूप से हमारे सामने आता है।
- तुलसीदास जी ने साहित्य के माध्यम से हमारे जीवन व जगत के बीच ऐसे सामाजिक मूल्यों को स्थापित किया है। जिनका अनुकरण करके हमे सर्वत्र प्रतिष्ठा, सफलता व आत्मनन्द की प्राप्ति होती है।

8. संदर्भ ग्रंथ

- शर्मा, आर. ए. (2011) "शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया", आर. लाल बुक डिपो।
- श्रीवास्तव, डी. एन. (2012) "अनुसंधान विधियाँ", साहित्य प्रकाशन, आगरा।
- Koul, L. (2008), Methodology of Educational Research, New Delhi: Vikas Publishing House Pvt. Ltd.
- https://the.studentsmotive.blogspot.com
- https://www.britannica.com
- https://www.shodhganga.co.in